रचनाकार की कलम से .....

हिन्दू धर्म में भजन–कीर्तन उपासना की एक पद्धति है । भजन की पुस्तकें व अलिखित भजन काफी मात्राा में उपलब्ध हैं । भजन को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है, एक भाव प्रधान, दूसरा संगीत प्रधान । संगीत प्रधान से श्रोता झूंम उठते हैं तथा ये भजन कर्णप्रिय होते है, भक्तों को आकर्शित करते हैं, भीड़ लगती है, किन्तु दूसरी ओर भाव प्रधान में भक्त भावविह्वल हो जाते है तथा भगवान झूम उठते है, श्रोताओं को संख्या भले ही नगण्य हो ।कई भक्त अकेले बैठकर भी भजन करते हैं । ये लोग दिखावा कम व ईश्वर के प्रति अतिआस्था के द्योतक हैं । मैंने प्रयास किया है कि संगीत प्रधान व भाव प्रधान भजनों का समन्वय हो । अलग–अलग देवी–देवताओं, अलग –अलग स्वरों में अलग–अलग शैली में अलग–अलग अनुकूल राग में भजनों की रचना का प्रयास किया है। यह रचना ढांचागत मात्रा है । इसमें हर भक्त गीतकार, संगीतकार, अपनी सुविधा से शब्द व्यंजनों का स्वरूप बदलकर या राग बदलकर अपने अनुकूल भजन गाने को स्वतंत्रा है । अनुक्रमणिका में अनुकूल राग को टेक में दी गई है, किन्तु वह अनिवार्य नहीं है। जब सारी रचनाएं केवल बुनियादी ढांचा मात्रा के अनुसार लिखी हैं तो प्रबुद्ध पाठक भाशा की अशुद्धि की ओर ध्यान नहीं देगें । वैसे भी पद्य में व्याकरण की अनिवार्यता होती ही नहीं है । इस लघु पुस्तक को छापने में श्री संतलाल गुप्ता पिलानी वाले, श्री प्रमोद खण्डेलिया झुंझुनू वाले, श्री शिवकुमार शर्मा प्रेसवाले, श्री विनय सिघंल कम्प्यूटर ऑपरेटर, व अन्य व्यक्ति श्री मनोहर धूपिया, राजकुमार स्वामी, राजेश नायक, राजेश शर्मा, रामनिवास सोनी व रामगोपाल दाधीच का सहयोग रहा, जिन्होंने इन भजनों को राग देने का प्रयत्न किया । मेरी पत्नी श्रीमती सुशीला पारीक व मेरे दोहित्रा अनमोल शर्मा ने मुझे भजन लिखने के लिए सहयोग दिया, जिनका हृदय से आभार । शुभकामनाओं सहित ।

झुंझुनू
दिनांक– 15.9.2007 शशि कुमार पारीक'परख'
गणेश चतुर्थी

पारीक कृत भजनामृत

रचयिता :
शशि कुमार पारीक
'परख'

— व ि 2007 —

पारीक कृत भजनामृत

लेखक :

शशि कुमार पारीक

जिला एवं से ान जज, झुंझुनू

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2007

प्रथम मुद्रण – 5000 प्रतियां, 20 सितम्बर, 2007

© लेखकाधीन

सम्पादकीय : डॉ. रामस्वरूप 'परेश'

प्रकाशक : 1. श्री प्रमोद खण्डेलिया
परख साबुन वाले, झुंझुनू
2. श्री सन्तलाल गुप्ता,
निहाली चौक, पिलानी ।
PH. : 01596-242196

मुद्रण : शिव कुमार शर्मा (प्रेसवाला)
शिव प्रिंटर्स, झुंझुनू ।
Mobile : 94147-43977

मूल्य– अनमोल

लेखक परिचय

शशि कुमार पारीक, मूलतः राजस्थान राज्य में जिला नागौर के संखवास ग्राम, ननिहाल में जन्मे तथा प्रवासी राजस्थानी होने से कर्सियांग, (दार्जिलिंग) पश्चिम बंगाल में लालन–पालन व प्रारम्भिक शिक्षण हुआ। भादो सुदी चौथ विक्रम सं. 2006 तद्नुसार शुक्रवार 12 अगस्त, 1949 है। पश्चिमी बंगाल माध्यमिक बोर्ड से मैट्रिक करने के पश्चात् बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.एस. सी. व आसाम में एक वर्श चाय बागानों में काम कर, जोधपुर विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की है। दो वर्श की वकालत मेडता राजस्थान में करने के बाद 12.6.1976 से राजस्थान न्यायिक सेवा में, तत्पश्चात् दिनांक 29.8.1992 से राजस्थान उच्च न्यायिक सेवा में हैं। वर्तमान में सुपर टाइम वेतनमान में जिला एवं सेशन न्यायाधीश झुंझुनू के रूप में कार्यरत हैं। राश्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल में भारत के चंद सफल व सक्षम न्यायाधीश होने से बेस्ट प्रेक्टिस जजेज के रूप में सेमीनार में भाग लिया। अत्यधिक व्यस्त न्यायाधीश होते हुए भी समय चुराकर अपने मन के भाव अधिकतर पद्यात्मक रूप में पेश किये हैं, जिन्हें परिमार्जित व शुद्ध करने का अवसर शायद ही मिला। हिन्दी, उर्दू की कविताएँ या नज़्म, यहाँ तक की भजन व दोहे व लघु कथा व लेख आध्यात्मिक व सामाजिक जीवन के परिवेश पर प्रकाशित होते रहे हैं। विधिक साक्षरता को नया आयाम देने हेतु विधि का ज्ञान आम जनता को कथा व कविता के माध्यम से कराने हेतु एक पुस्तिका भी प्रकाशित करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। काव्य पुस्तिका ''एहसास के दाने'' इनका पहला प्रकाशित संकलन है, जिसका पांच बार मुद्रण दो माह की अवधि में हुआ । दूसरी राजस्थानी के दोहे 'कोई ठोड़ कोनी' प्रकाशित हुई तथा उसका दूसरा संशोधित व विस्तारित संस्करण नये कलेवर में प्रतिश्ठित प्रकाशक के पास प्रेस में है। यह भजनामृत स्वांत सुखाय अलग–अलग राग शैली में भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं के सन्दर्भ में है, जिसकी कैसेट व सी.डी. भी शीध्र जारी करने के प्रयास हैं। श्रद्धालु भक्तों को सप्रेम निःशुल्क समर्पित है।

क्र.स.	ी ि / (तर्ज)	पृ ठ
13.	कीर्तन बाबा सालासर	33–34
14.	मे'रा दाता नटराज	35–37
15.	अमिला ाा	38–39
16.	आरती श्री जीण माता	40–41
17.	बालाजी के नाम पाती	42–43
18.	कान्हा बिरज धणिया (छोरा रामधनियां तेरे कांई चीज को दुखड़ो)	44–46
19.	समर्पण (होठों से छूकर तुम मेरे गीत अमर....)	47
20.	शिव स्तुति	48–52
21.	मनहर (ये दिल ना होता बेचारा)	53–54
22.	श्री शिव मृत्युन्जय पाठ	55–58
23.	स्तुति चारधाम	59–60
24.	मनोकामना	कवर में

सम्पादकीय

श्रद्धालु भक्तों का पाथेय : पारीक भजनामृत

भजन श्रमसाध्य न हों और प्रयास और आडम्बर से अलग हों तो नि चत ही वे गंगोत्राी से निसृत पावन स्त्राोतस्विनी सुरसरिता की भांति लोक मंगलकारी तो होते हैं लोगों की जुबान पर चढ़कर लोकप्रियता भी प्राप्त करते हैं। ख्याति प्राप्त न्यायमूर्ति आदरणीय शशिकुमार जी पारीक की नवीन कृति 'पारीक भजनामृत' इसी श्रृंखला की एक सशक्त और सफल कड़ी है।

प्रस्तुत भजनामृत का कलेवर यद्यपि लघु है किन्तु इसमें विराट के प्रति निश्काम, सात्विक और सरस भाव निवेदन है जिन्हें पढ़कर, सुनकर और गाकर न केवल चित्त को शान्ति और सकून मिलता है बल्कि जीवन की जंग में हारे, विवश और निराश्रितों को बल मिलता है और मिलता है जीवन का पाथेय। यह लोक प्रचलित है कि अमृत की तो एक बूंद भी अमरत्व प्रदान करने में सक्षम है और यह भजन संग्रह तो अध्यात्म पीयूश की ऐसी निर्झरणी प्रवाहित करता है जिसमें श्रद्धालु भक्तजन अवगहन करते भी नहीं अघाते।

भक्ति के नौ आयाम माने गए हैं। वे सारे आयाम लगता है पारीक जी के भजनामृत में विभिन्न रंग और गंध वाला पुश्पस्तबक है। भावों के विभिन्न रंग आध्यात्मिक जीवन का इन्द्रधनुश तानते हैं वहीं अपने आराध्य के चरणों में आत्म समर्पण की सुवास का जादू जन–जन में जगाकर उन्हें भक्ति भाव रस से सिक्त करते हैं।

पारीक जी के भजनामृत में विभिन्न देवी–देवताओं तथा जग नियामक सृजन, पालन और संहारक परम शक्तियों के प्रति कहीं उत्कट दर्शन की प्यास है तो कहीं समर्पण की व्याकुलता। कहीं भगवान के रूप गुण सौन्दर्य और गुणों का बखान है तो कहीं भव सागर से पार उतरने का एकनिश्ठ विश्वास। कहीं बजरंगी का भरोसा है, कहीं शक्ति पीठों की कृपाकांक्षा – कुल मिलाकर समूचा भजन संग्रह सभी श्रद्धालुओं के लिए उपयोगी और कल्याणकारी, कलिमलहारी और मनोबल वृद्धि करने वाला है।

अपराधियों को सजा का फरमान लिखने वाले और निर्दोश को मुक्त करने का आदेश देने वाले आदरणीय पारीक जी की

कलम भावों की स्याही में डूबकर जब कागज पर भक्ति अमृत की एक–एक बूंद से पृश्ठ रंगती है तो आश्चर्य ही नहीं होता बल्कि उनके बहुआयामी होने का प्रमाण भी मिलता है। सरस भक्ति में सरोबार कलम श्रद्धालुओं के ह्रदय पर शासन करने के लिए पर्याप्त है।

प्रस्तुत भजन सात्विक ह्रदय की स्वाभाविक उदात्त अभिव्यक्ति हैं। न वह व्याकरण के शुश्क नियमों की मोहताज है और न भाशा के इन्द्रजाल से प्रभावित। श्रद्धालु भक्त स्वतंत्रा हैं – जिस राग और लय में अपने आराध्य को रिझाना, मनाना चाहें, जिस तेवर में प्रस्तुत करना चाहें, उनका उद्देश्य तो आराध्य के प्रति भाव समर्पण ही है।

कीर्तन, स्तवन, स्तुति, वंदना, स्तोत्रा नाम वैविध्य हो सकता है और भाव वैविध्य भी हो सकता है किन्तु सबका लक्ष्य एक है और शाश्वत है।

चारधाम की स्तुति प्रचलित परम्परा में एक नई दृश्टि का उदार मोड़ है। माता–पिता, गुरू और जन्मभूमि हमारे जीते–जागते और अहर्निश प्रेरणा और संजीवनी प्रदान करने वाले तीर्थ हैं। उनका समावेश इस पुस्तक में करना और नये धाम की संज्ञा देना कवि का उदार दृश्टिकोण है। साथ ही शिव मृत्युंजय स्तोत्रा का राजस्थानी पद्यानुवाद संलग्न कर संस्कृत के क्लिश्ट स्तोत्रा को आम श्रद्धालु के लिए सुगम बनाना भी पारीक जी का शिव भक्तों के लिए सौगात से कम नहीं है।

वास्तव में यह भजनामृत अन्य भजन संग्रहों से कई अर्थों में अलग और विशिश्ट महत्व रखता है, साथ ही अपने नाम को भी सच्चे अर्थों में सार्थक करता है। आशा है श्रद्धालु पाठक, श्रोता, गायक और भक्तजन इससे लाभान्वित होंगे तथा इहलोक के शान्ति बल और अध्यात्म का अवलम्बन पाकर आत्मिक सुख और शान्ति प्राप्त करेंगे।

– डॉ. रामस्वरूप परेश
इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मीडिया एण्ड टेलीविजन
रोड़ नं.2, अशोका होटल के पास, झुंझुनू

–अनुक्रमणिका–

क्र.स.	ी ा / (तर्ज)	पृ ठ
1.	गणपति बप्पा मोरियां	9
2.	गणेश ध्यान	10
3.	पैली पुकार (भीगे होंठो पर – प्यासे नैन मेरे)	11–13
4.	माँ शाकम्भरी स्तुति	14–15
5.	वंदना माँ ाकम्बरी स्तुति	16
6.	जगन्नाथ रथयात्रा महिमा (जसोमति मैया से पूछे नन्दलाला)	18–19
7.	जसोदा के लाल सांवरे (वो दिल कहाँ से लाऊँ)	20
8.	सांवरियो प्यारो–भजन	21
9.	नाम– दर्शन सालासर बालाजी (चांद भी देखा, फूल भी देखा)	22–23
10.	भजन महावीर	24–25
11.	भजन बाबा बजरंगी	26–28
12.	राम नाम भजन (कितना मधुर कितना सुंदर)	30–32

स्तुति.....

गणपति बप्पा मोरिया–
(–पूजे वृद्ध, जवान, छोरे–छोरियां।।)

जय हो ! गौरीसुत,
मातृ–भक्ति के प्रतीक।
जय हो ! ऋद्धि–सिद्धि के दाता,
कृपा रखो दास पर सटीक।।

विवाह पूजन यज्ञ मूहरत में
होवें जिनकी पहली पूजा।
आन बढ़ावे, शान रखावें,
कर न सके यह काज दूजा।।

मीन–चक्षु, गज–नासिका,
लम्बोदर के है गजदंत एक।
बुद्धि विलासिता बदन है भारी,
दर्परहित देव मूषक–सवारी।।

जय हो बप्पा गणपति,
जय जय गणेश गणनायक।
भक्त 'शशि' के विघ्न हरे,
जय जय देवेश विनायक।।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।
गणपति रो ध्यान–
श्री गणेश करां आज,
म्हारे हिया मां बास–
करो विनायक महाराज।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवां सच प्यारा।
लम्बोदर एक दंता–
होवै सैसूं पैली पूजा,
बुद्धि विलास रा देव,
दे सकै ना दूजा।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।
अणूता ध्यावै देव–
काम करै ना केव।
ऊंदरा री सवारी पर–
भारी गजबदन देव।

–गणेश ध्यान–

गणेश गणपति ध्यावै, कदै आसी बदन सिंदूरियो,
रिद्वि सिद्वि रा दातां, विराजो म्हारे टूट्यो टापरियो।

पारवती पूत, संकर सुत, थारी माया सैंसू न्यारी रै,
लम्बोदर एकदंतो देव, पूजे पैल्ली पारी रै
पैली पोत रा देव, खावै फल–मेवा रै,
भगत करै दिनरात, बुध नै सुद्ध सेवा रै।

गणेश गणपति ध्यावै, कदै आसी बदन सिंदूरियो,
रिद्वि सिद्वि रा दातां, विराजो म्हारे टूट्यो टापरियो।

ध्यावै सब्बै, थानै म्हारे विनायक जी,
देवा रै देव, बुद्वि विलास रै लायक जी ।
अणूतां ध्यावै ध्यान बंटावै, काम कोई नी आवै जी,
गणपति बप्पा मोरियां, विध्न सारी हटावै जी।

गणेश गणपति ध्यावै, कदै आसी बदन सिंदूरियो,
रिद्वि सिद्वि रा दातां, विराजो म्हारे टूट्यो टापरियो।

पैली–पुकार

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।
लागो गजानन थै तो–
कोरा म्हारा आधार,
सुणो हेलो म्हांरो–
विवेक बुद्वि रा दातार।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।
जमकर बरसाओ–
आज दया अपार,
करो थे ही उद्धार–
थे ही अब भव पार।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थांरा
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।
विनायक पधारो–
रिद्वि–सिद्व संग,
आज तो पारीक नै–
लगाओ आपरै अंग।

'वंदना माँ साकम्बरी पीठ'

जय जगदम्बे मात भगवती,
जय–जय साकम्भरी माता की ।
सब मिल नै प्रेम से करै जयकार,
साकम्भरी माता की, जीवनदाता की ।।1।।

दक्ष सुता भई, सिव पटरानी,
सती मां ही, भवानी कहलाई ।
ब्रह्माणी रुद्राणी, माता दोई,
सोहे मालकेतु, साकम्भरी माई ।।2।।

गदा तिरसूल, खड़ग धारिणी,
दुख हरणी माता, सुखदाता की ।
सब मिल नै प्रेम से करै जयकार,
साकम्भरी माता की, जीवनदाता की ।।3।।

महादेव रो कर्‌यो, दक्ष अपमान,
यज्ञ मा अग्नि–स्नान लियो माता ।
कुपित हो रूद्र, खोल्यो तीसरो नेत्रा,
सती देह विग्रह कर्‌यो, हरि विधाता ।।4।।

धरती मां उतरी, माता भिवप्रिया,
कल्याण जीव रो, करनै असुरजीत ।
माता रा इक्यावन अंभा विखर गया,
होया भाक्ति पीठ भवानी रा सृजित ।।5।।

दरसन सुलभ नवदुर्गा साक्षात् माता का,
मॉ तो निभावै धरम आप रै प्रेम नाता का।
सब मिल नै प्रेम से करै जयकार,
साकम्भरी माता की, 'पारीक' रै जीवनदाता की ।।6।।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थारां
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।

पूजै थानै बदन सिंदूर–
कहलाओ पार्वतीपूत।
सिद्ध करो कामना–
जदै हो संकर सुत।

तीसा नैण म्हांरा– मांगै दरसन थारां
दिख जावै सपने– मानलेवा सच प्यारा।

तीसां नैण म्हांरा–
मांगै दरसन थारां।
दिख जावै सपनै–
मान लेवा सच प्यारा।

–माँ साकम्बरी स्तुति–

माता साकम्भरी रै द्वार, दुनियां कर रही जय–जयकार,

मालकेतु कोट जग में नामी, देव्यां में ब्रह्माणी रूद्राणी।

गौ सेवा हित जन्मे दयानाथ, बिराजे महंत सिरोमणी,

इण मायड़ रा स्वरूप नवकार, दुनियां कर रही जय–जयकार ।।1।।

सिद्ध भाक्ति पीठ नवदुर्गा–भवानी, साकम्भरी अम्बे कहाई,

सती–अं ा, ि ाव–प्रिया माता की, भगत करै खूब बड़ाई।

लीन्हा देवी कलि हेतु अवतार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।2।।

लड़–झड़ लूम्बी लाल बोरियां, झाड़कियां झकझोर,

काची खट्टी केरियां, बैठ्या मीठा बोलै मीठ्ठु मोर।

रुंखड़ा हर्या–भर्या खड्या अपार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।3।।

कैर–कैरी केरूंदा री बहार, मरूधरां रा इण उपवन ताणी,

निज मंदिर रै उताराध लोहार्गल कुण्ड़, जग जाणी।

सुणै जठै भगतां करै पुकार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।4।।

मकराणै रो बण्यो मिन्दर, सोभा बरणी नहीं जावै,

चैत–आसोज, गुप्त नवरात्राां, नित रां छप्पन भोग चढ़ावै।

ऊंचो साकम्भरी रो आथूणो दरबार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।5।।

दरसन रा व्याकुल फकीर–धनवान, नेता–अफसर, कानी कानी सूं आया सपरिवार,

दरसन दे करी पाटिल प्रतिभा, मिल गई मां री आभा, पैर गई सैसूं मोटो जयहार।

मां रा सेवादार, करै प्रचार, जगदीभा, सुमन, केदार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।6।।

माता म्हांरी अबै लियो थारो आसरो, अरज सुणो जननी, जाचक पाारीक री,

वैस्नव ओम ले संग दीनदयाल–राजेन्द्र पुजारी, चावै चाकरी चरणां मां साकम्भरी थारी।

कातर भगतां करै आस, कीज्यो बेड़ो पार, दुनियां कर रही जय–जयकार।।7।।

जय श्री कन्हैया

जसोदा के लाल सांवरे

जसोदा के लाल सांवरे,..... पुकारे मन गोपाला,
बिगड़ी संवारे कान्हा,..... जो है बिरज के लाला।

भयाम है वरण जाके,..... वाके बदन सोहे,
राधिका हो या गोपिका,..... सबका मन मोहे,
मुरली की धुन में,..... वृदांवन सुध खोये,
तब सजती ब्रजबाला,..... गोवर्धन धारी निहारे।

जसोदा के लाल सांवरे,..... पुकारे मन गोपाला,
बिगड़ी संवारे कान्हा,..... जो है बिरज के लाला।

तुमने सुनाई गीता,..... जोड़ा ज्ञान से नाता,
संग रहे जाके,..... बलराम जैसे भ्राता,
योग–भोग के संग,..... नीति के विधाता,
मनोबल लौटाने वाले,..... नंद के नयन तारे।

जसोदा के लाल सांवरे,..... पुकारे मन गोपाला,
बिगड़ी संवारे कान्हा,..... जो है बिरज के लाला।

राधे किसन को गोकुल,..... तन मन से ध्यावे,
खोये विभवास जिनका,..... पल में लौट आवे,
मन के विशाद उनके,..... क्षण में मिट जावे,
पल में गोकुल के ग्वाला,..... दरसन दे, जमुना किनारे।

जसोदा के लाल सांवरे,.... पुकारे "पारीक" गोपाला,
बिगड़ी संवारे कान्हा,..... जो है बिरज के लाला।

जगन्नाथ रथयात्रा महिमा

आओ पधारो म्हारे द्वार, बलराम, सुभद्रा, जगन्नाथ जी !
दरसन रा तीस्सा भगतां, थारै बिना भया अनाथ जी !

नारायणदास जी मोकाला रा, थे ठाकुर जगन्नाथ जी,
ऊभा उडीकां दरस दिखाओ, भगतां नै श्रीनाथ जी !
चम्पा, चमेली, बेला, मोगरा, हार गुलाब रो चढ़ायोजी,
मोत्यां सूं चौक पुरायो, दीन सखा दीनानाथ जी ।

आओ पधारो म्हारे द्वार, बलराम, सुभद्रा, जगन्नाथ जी !
दरसन रा तीस्सा भगतां, थारै बिना भया अनाथ जी !

चंदन रा रथ सजाया, जिणपर बिराजे द्वारकानाथ जी,
फूलां री जाजम बिछी, जिणपर धरे चरण बैकुण्ठनाथ जी।
धूप दीपां सूं म्हे तो कंचन थाल सजायो साथ–साथ जी,
शट् रस भोजन, राजभोग रा भात, रुचै श्रीनाथ जी।

आओ पधारो म्हारे द्वार, बलराम, सुभद्रा, जगन्नाथ जी !
दरसन रा तीस्सा भगतां, थारै बिना भया अनाथ जी !

छोटी सी उड़िया नगरी, जगन्नाथ पुरी, भला बिराज्यां त्रिभुवन नाथ जी,
लम्बी चोटी, गरदन मोटी, आधी टांगां उघाड़ी, जिणरा जगन्नाथ जी।
जगन्नाथ रा भात, जगत पसारै हाथ, बिन भाग मिले ना तात,
हर साल नुंवा तैयार रथ यात्रा मां फिरे, दरसन देवे जगन्नाथ जी !!

आओ पधारो म्हारे द्वार, बलराम, सुभद्रा, जगन्नाथ जी !
दरसन रा तीस्सा भगतां, थारै बिना भया अनाथ जी !

अन्न–धन लिछमी, धान–खलिहान, बरसात लाओ नाथ जी,
सुख भारत मां लाओ, दुखियां रा दुख मिटाओ, पुरी का रमानाथ जी।
भोला भगता री अरदास, अन्तिम आस, सिर पर थारो हाथ जी,
जन जन रो विश्वास, अकेला जगदीश, रक्षा करो त्रिलोकीनाथ जी !!

आओ पधारो सा म्हारै द्वार, बलराम सुभद्रा जगन्नाथ जी,
दरसन रा तीस्सा "पारीक", थारे बिना भया अनाथ जी ।

सांवरियो प्यारो – भजन

सांवरियो प्यारो, मांगै है माखन–मिसरी,
म्हारां सांवरियां नै, यभोदा धंधा मां बिसरी।
भूखा सांवरियां रै, भाता संग बेगी निसरी,
भोग लगावै किसन मुरारी, निहारै राधा प्यारी।।

म्हें तो आली, बिरज की बावली, कान्हा चरावै गायां,
बावरियो कोनी सांवरियो, जाण भूल्यो भयामल काया।
मुरली री धुन मनमोहनी, राधा रा होस गमाया,
रासलीला मां जमायो माया, सब नै नांच नचाया ।।

ओलमां देवै गोपियां, बाल समझ, खूब समझायो,
कान्हो बैरी पूरा गांव रो, पैली रिझायो, अब खिझायो ।
गोपाल भयो जगपाल, समेटी माया, हो गयो मन भारी,
द्वारका पधारै देवकीलाल, माई भई बावरी, रौवे राधा प्यारी ।।

सावंरियो प्यारो मांगै है बिरज सूं बिदागरी,
म्हारां सांवरिया नै, कोई नहीं कदै बिसारी ।
भक्तां खातर छोड़ गयो मुरली–मथुरा, माखन–मिसरी,
भोग लगावां किणनै, कान्ह बिन, बेसुध राधा प्यारी ।।

सांवरियो प्यारो, मांगै है माखन मिसरी,
'पारीक' रा सांवरियो नै, कोई नहीं कदै बिसरी ।।

जग में सांचा है केवल एक वीर,
वज्र अंगी कहो या कहो महावीर,
जो आवै तुम्हारे द्वार, उसका होवै बेड़ा पार,
संकट से उबारै खोये नहीं धीर।
जग में सांचा.....टेक

सुग्रीव का साथ दिया निर्वासन में,
भटके बन अनुचर उनके संग में,
कूटनीति में पारंगत, कराया मेल सुग्रीव से,
हराया बाली को राम से जंग में।
जग में सांचा.....टेक

स्वामी के आदेश से बने सहचर,
मन में रखी तब राम व्यथा,
कर दुर्गम सागर पार, की सीता की तलाश,
वीर हनुमान की दुर्लभ है कथा।
जग में सांचा.....टेक

नाम– दर्शन सालासर बालाजी

राम भी देखा,

भयाम भी देखा,

पुरी, द्वारका, काभी, मथुरा,

कोई नहीं हैं ऐसा,

तेरा धाम है जैसा,

तेरा धाम है जैसा !

मेरे मन ने, यह कैसा रूप है देखा,

गगन है जहॉ तक ऊँचा,

वहाँ तक रूप है देखा !

मेरे मन ने चुना, तुम्हें सारे मंदिर देखकर,

किसके दरसन, किसके दरसन करें,

अब सालासर बालाजी के दरसन कर !!

मेला भी देखा,

उर्स भी देखा,

मंदिर, गिरजा, ईदगाह, गुरुद्वारा,

ईद भी देखी, प्रार्थना भी देखी,

गुरु–पाठ भी सुना, कीर्तन भी सुना !

कोई नहीं ऐसा,

तेरा नाम है जैसा !

मेरे दिल ने, यह कैसा दरसन है देखा,

सागर है जितना गहरा, उतना दरसन है देखा !

मेरे दिल ने सुना नाम तेरा,

सारे नाम सुनकर,

किसका कीर्तन, किसका कीर्तन करें,

अब सालासर बालाजी के कीर्तन कर !!

अयोध्या भूप की रखने आन,
नहीं लाये मां सीता को अशोक वन से,
संग्राम था कठिन, रावण कुल से,
बचाया लक्ष्मण को बुझते जीवन से।
जग में सांचा.....टेक

जब विफल सारे योद्धा हुए,
युद्ध किया अहिरावण ने कौशल्या नंदन से,
बंदी हो गए जब दोनों भाई,
कर संहार उसका, मुक्त कराया पाताल बंधन से।
जग में सांचा.....टेक

परमार्थी जीवन नहीं कोई अभिलाशा,
कैसा स्वामी–भक्ति का अद्‌भुत दृश्टांत।
खो गये सिद्धपूर्ण योग में, पूर्ण कर काम,
'पारीक' कहे यही महावीर का वृतान्त।
जग में सांचा.....टेक

भगत तो भूखा मर रिया है बाबा,
फेर तन्नै भावै कियां सवामणी ?
टांबर भूखा सौवे, बै तो भक्ति नै रोवै,
नींद कियाणी आवै, सालासर का धणी?
भाव–भक्ति रा प्यासा 'पारीक' री
प्यास मिटा दे, पार लगा दे भवतीर रै।
सुध ले ले भावां रा भूखां री,
सम्हाल बाबा हनमंत महावीर रै।
जय हो बाबा बजरंगीकृ.....कृटेक(5)

तू तो है बाबा सबरंगी
कद सुधारोगा, बाबा कद संवारोगा,
म्हारो बिगड़्यो डोळ बजरंगी।
जय हो बाबा बजरंगी,
तू तो है बाबा सबरंगी।

भजन बाबा बजरंगी

जय हो बाबा बजरंगी,

तू तो है बाबा सबरंगी।

थारो नाम बाबा वज्र अंगी,
पण लोग बुलावै तन्नै बजरंगी,
कद सुधारोगा, बाबा कद संवारोगा,
म्हारो बिगड़ियो डोळ बदरंगी ?
जय हो बाबा बजरंगी.....टेक (1)

म्हारो मन तो नखरालो सितंगी,
पण बो तो है भक्ति रो नवरंगी,
बाबा तू तो रामभक्त रो सबरंगी,
मन्नै क्यूं फेर बणायो बदरंगी ?
कद बणासी बाबा म्हानै,
थारी भक्ति–भाव रो रसरंगी,
कद सुधारोगा, कद संवारोगा,
म्हारो बिगडियो डोळ बदरंगी ?
जय हो बाबा बजरंगीकृकृ.....कृटेक (2)

धान कोनी, चून कोनी,
घरां मां आ गई तंगी,
चूल्हा म्हारा ठण्ड़ा पड़ग्या,
दूर हुया सारा साथी–संगी,
संकट में साथ निभावै म्हारो,
अकेलो तू ही बाबा बजरंगी,
मैं तो बाबा भावां रो भूखो भण्ड़ारी,
भूखो भजन क्यानै होवै तारणहारी !
जय हो बाबा बजरंगीकृ.....कृटेक (3)

रोटी कोनी, गाबा कोनी,
और कोनी अंटी में दाम रै।
खेत बिक्या, बासन बिक्या सारा,
करबा नै कोनी कोई काम रै।
लीरी धोती, फाटी बण्ड़ी,
पाग तो हो गई तार–तार रै।
म्हैं तो बाबा थांरा टाबर–टिंगर,
म्हारी बिगड़ी नै बेगो संवार रै।
जय हो बाबा बजरंगीकृ.....टेक (4)

राम परिवार

कितना मायावी, कितना भयंकर,
कुंभकर्ण, रावण संहार।

भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।। 12।।

देवगण मुनिगण, जनकपुरी अयोध्या,
सब में छाया हर्श अपार।

भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।13।।

राम जानकी, लखन–हनुमान,
लियो अयोध्या ने बलिहार।

भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।14।।

कितना सलोना, कितना सुहाना,
राज तिलक राम दरबार।

भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।15।।

पतित पावन, दिया उदाहरण,
राम भक्त वीर हनुमान।

भजना होगा सालासर दरबार,
कई कई बार।।16।।

–राम नाम भजन–

कितना सुखद, कितना सहज,
राम तेरा अवतार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।1।।
कितना निर्मल, कितना विमल,
राम जानकी का प्यार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।2।।
क्षीर सागर रमापति का आगार,
हरि ने त्यागा पवित्रा द्वार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।3।।
कितना सुखद, कितना सहज,
राम तेरा अवतार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।4।।
माता पिता पुरवासी अयोध्या,
रोते सारे जार जार।
भजना होगा राम नाम ,
कई कई बार।।5।।
सेवक–सेना संग भरत–राजकुमार,
लेने आए नदी किनार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।6।।

वल्कल धारण, करे कुटीर आवास,
लिया राम वनवास।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।7।।
कितना सरल, कितना सफल,
राम लखन का व्यवहार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।8।।
सीता–हरण जटायू–मरण,
हनुमन्त सुग्रीव मिलन।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।9।।
लंका तरण, हनुमान बंधन,
खोजी सीता सागर पार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।10।।
अंगद चरण, मिलन विभीसण,
मेघनाद संहार।
भजना होगा राम नाम,
कई कई बार।।11।।

–कीर्तन बाबा सालासर–

सत्संग रो जम्यो है रंग चकाचक,
करज्यो कीर्तन ध्यान लगाय।
सुरलोक रो सुख पावै हिया में,
सात जन्म सुफल हो जाय।।

हो ध्यावै मेहंदीपुर सालासरवाला,
मन नै भावै लाल लंगोटीवाला,
हो चैत री पूनम नै लगावै मेळा,
मंगल शनि जिणरा ठाठ निराला।
हो, करके कीर्तन भजन थारा बाबा बजंरग,
हो, मिट जावै पीड़ा सारी, होवै मोहमाया भंग।।

संकट हरो, हे संकट मोचक हनुमान,
पवनपूत–अंजनीसुत ! पधारो घणा मान !
भूखा तीसा जातरू, पाळा हाळै, भक्त बावळा,
मेटो सबा रो कश्ट, पूरी करो आस उतावळा।।

हो करके कीर्तन भजन थारा बाबा बजरंग,
हो मिट जावै पीड़ा सारी, होवै मोहमाया भंग।।

थे इ तो हो भोळां रा सांचा भोळा नाथ
माता पारबती रा सुहाग भुजंगहार जी।
बूझै है उबा सगळां सरधाबान
कठे है बाबा रो ठांयचो सोमनाथ जी।
म्हानै तो बतावो मारग म्हादेव
ज्योति रा बारा लिंगी रो ओंकार नाथ जी।
बिरखा रा दाता.....(4)
सिलगे सूरज तक भी सोरो है पूगणों
पण कोनी सिवजी रा दरसण ख्याळ तमासो जी।
जबरै पसुपति सारू सोरा है सगळा ख्याल
उणरा घणां घणां वारणां जिणरो सगळै बासो जी।
उज्जेन में निवास करै है काळी रा भी काळ
समदर किनारै ओपै धाम रामेसर नाथ जी।
थे ई अमरनाथ, बदरी अर केदार धाम
अर थे ई बिराजो हो कासी में विस्वनाथ जी।
बिरखा रा दाता.....(5)
थे ई हो त्रिपुरारी बाबा थे ई भोळा भंडारी हो
तीन्यूं ताप मेटवाळा थे ई सिव महाराज जी।
अगम जटा री सरणाती सूनी रोई मांय
बिचरै झैरीला काळा नाग महादेव नटराज जी।
कळकळ नाद करै पापनासणी गंगा माता
उठै जटावां में उफाण ऊंची गंगा लहरी भारी जी।
कुण नी चावै कलि मलहारी गंगाजी रो न्हाण
आ ई तो है जनम जनम रा पापा री तारण हारी जी।
बिरखा रा दाता.....(6)
सांचा भूत नाथ ने भसम रमावो सगळै डील
तिरलोचन थांरा तीनू नेतर घणी तेज आंच हाळा जी।
थारै निरमल नैणां मायं समाणा सगळा भक्त
पाप मेट जण जण रा नाचै नाच तांडव हाळा जी।
तीजा नैण सूं निसरै दुस्टां सारू लपटां लाय
इण आगी सूं धधकै सो संसार कांपै सै रूद्राक्ष जी।
पाप हुवै सिव भक्तां रा आखा भस्म, निर्मळ सारा
दया री पावन दीठ चिनीक राळो म्हारै भी गवाक्ष जी।
बिरखा रा दाता.....(7)

हो, फेर तो हो जावै दंग, भगत करै हुड़दंग,
हो, लेकर चंग–रंग, नाचै मस्त जत्था रै संग।
गावै आरती, बजावै नगाड़ा ढ़ोल–मिरदंग,
हो बाबा तू भगतां रो सरताज, भक्ति रो नवरंग।।

हो, करके कीर्तन भजन थारा बाबा बजरंग,
हो, मिट जावै पीड़ा सारी, होवै मोहमाया भंग।।

राज भोग थारो सवामणी, दाल–बाटी चूरमा रै संग,
सैसूं सुंदर जग मां थारो रामभक्ति रो रंग।
थारै नाम सूं जीत जावै, जीव जीवन रो जंग,
दरसन करां, धूजै तन, फड़कै अंग अंग।।

हो, करके कीर्तन भजन थारा बाबा बजरंग,
हो, मिट जावै पीड़ा सारी, होवै मोहमाया भंग।।

मे'रा दाता नटराज

चांदड़लो तो सजियो सिव रै भाल
उजळी किरणां सूं दीपै है विसाल जी।
ससि जटा सूं उतरी गंगा माय
हरै पाप जण जण रा धणी दयाल जी।
रोटयां बस सुपना में दीखै
जोवै सगळा भूखा बाट काळा बादळजी।
सूख्या सगळा खेत तिड़कगी धरती
पलक उघाड़ो अब तो देव मतवाळ जी।
बिरखा रा दाता.....(1)
तपै तावड़ो तेज ढ़ळै सिड्या सीळी
नरम नरम रेसम सी उजळी रेत जी।
पण थे सिरंगी बजाणों कियां भूलगा
सूख्या मरूधर रा सगळा खेत जी।
अणबुझी रैसी तिरसा बैरण भूख
रोई में हांक दी गायां नै गुवाळ जी।
मेटो जणा जणा री तिरसा पीड़ा त्रास
संकट काटो थे काळ रो म्हाकाळ जी।
बिरखा रा दाता.....(2)
भूखा रैबारी राइका डुलगा मालवा
देस छोड़ बसग्या सगळा परदेसजी।
इयां तो आ जीवां जूण निमड़ ज्यासी
जे रैसी दुरभिख में सारा भूखा तिसाजी।
बूझे सिवजी माता पारबती रा पूत नै
रिद्धि अर सिद्धि है जिणरै पास जी।
म्हानै बताद्यो सिव रो पावन धाम
निरमळ मान सरोवर है क उजळो कैलास जी।
बिरखा रा .....(3)
कोई तो पावै दरसण देवां देव रा
तिसळै कोई डूंगर री ढ़ाल सूं केदार जी।

थे तो दीन दयाल हो प्रभु आंख्यां मींच्यी भूत
हो दानी मायावी अपार भूतां रा भूतनाथ जी।
गळै भी लगावै तो कियाणी भक्त बापड़ा
सगळा डर्यै थां सूं भूत प्रेतां रा नाथ प्रेतनाथ जी।
भगवान नीलकंठ रै गळा री सोभा स्यापां सूं
च्यारूंमेर गळा रै लपट्या नाग नागेन्द्र हार जी।
भगत कोई डसबो नी चावै डर्यै सै नटराज
कियां चालै कोई साथ आपरै छोड़ छाड़ संसार जी।
बिरखा रा दाता.....(8)
थे धारो डमरू त्रिसूल, विकराल प्रळैकारी सरूप
थे करूणा जल सूं भरयां उदार बादळ आसुतोस जी।
थांकै, आगै लारै भूत प्रेत रै सागै सगळा गण चालै
दरसण, ध्यान, पाठ–पूजा, व्रत सूं मन में व्है सन्तो ा जी।
कड्यां में बांध सिरंगी बाजो नाचो नूवी भाव मुद्रा सूं
द्यो ताडव री ताळ भयाणी कांपै, ऊंकार नाथ जी।
कोई तो बजा देसी सिरंगी सरधाबान, महादेव जी
एकर थे ई बजावो न सिरंगी ल्यो न हाथ किंकर नाथ जी।
बिरखा रा दाता.....(9)
करो अत्ते उपकार होळे सी बस फूंक मारद्यो
आसुतोस म्हाराज आ सगळी भस्मी झडज्यावैजी।
कई अठे सूता है भूखा तिस्या थांका प्यारा पूत
बरस बीतगा बानै लोग बापड़ा हवाकोरी खावैजी।
मा गिरजा री सीख ल्यो पाणी बरसाओ अचाळ
नातर देगी मा पारबती, थानै छोड़ दूजवर जी।
हेरणी पडसी थानै फेरूं हांड तिरलोकी रै मांप
कठे लाध सी थानै फेरयूं गौरी सी गिरवर जी।
बिरखा रा दाता.....(10)
बाजैली कैलास सूं मधुर सिरंगी आज।
उठा लियो म्हादेव जी आज आपणो साज।
भला न लागै आ भल्यै कानां नै आवाज।
पण तीतर बरणी घटा बरसावैला नटराज।
बरखा रा दाता आ हो संकरजी।
आ हो संकर जी, आ हो संकरजी।

— ाशि कुमार पारीक 'परख'

–आरती श्री जीण माता–

गावां थांरी आरती जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।

म्हे गावां मन चित ल्याय।
थारी सोभा वरणी ना जाय।
हे हर प्रिया जीण कहानी,
आदि सगत दुर्गा महारानी।।
जाचक जग पूरा आप दाता, जगत की माता,
गावां थांरी आरती जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।1।।

दैसाणै सीकर बिराजनी,
दुख हरणी रूद्र भवानी,
भगतां री भाग विधाता, जगत की माता,
गावां थांरी आरती जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।2।।

पूर्ण ब्रह्मनिश्ठा सिवप्यारी,
अखण्ड़ सौभाग सस्त्रा अस्त्राधारी,
भाल हिंगलू सौहे रंग राता, जगत की माता,
गावां थांरी आरती जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।3।।

अभिला II

राम ! तुझे भजा है मन ने,
पूजा नहीं, ये तो जीवन हो ।
सियाराम मेरे, आन तो रखना,
कृपा से तेरी, उर चंदन हो !

भजन से तेरे मुक्त, सब भव बंधन हो,
बंद जब दो नैन,पहले तेरे दर्भान हो ।

भयाम ! तुझे चाहा है हम ने,
रास नहीं, ये तो दर्पण हो ।
राधेभयाम मेरे स्वप्न में आना
चरणों में तेरे, जीवन अर्पण हो !

भजन से तेरे मुक्त, सब भव बंधन हो,
बंद जब दो नैन हो,पहले तेरे दर्भान हो ।

राम, सियाराम, जय जय सियाराम,
भयाम, राधेभयाम, जय जय राधेभयाम ।

बम ! तुझे देखा है दिल ने,
जप नहीं, मन पवित्रा हो ।
बैजूबम मेरे, ये तो करना,
जीवन में, निर्मल चरित्रा हो ।

भजन से तेरे मुक्त, सब भव बंधन हो,
बंद जब दो नैन हो,पहले तेरे दर्भान हो ।

अम्ब, तुझे, पाया है मैंने,
पाठ नहीं, वज्र तन हो ।
जगदम्ब मेरी, हम में भरना,
भाक्ति ऐसी, निर्भय मन हो ।

भजन से तेरे मुक्त, सब भव बंधन हो,
बंद जब दो नैन हो,पहले तेरे दर्भान हो ।

बम, बैजूबम, जय जय बैजूबम,
अम्ब, जगदम्ब, जय जय जगदम्ब ।।
राम, सीयाराम, जय जय सीयाराम,
भयाम, राधेभयाम, जय जय राधेभयाम ।

केसर कुं कुं तिलक लगावां,
चरणा म्हे श्रद्धा सुमन चढ़ावां,
दुख–कलेस हरणी सुखदाता, जगत की माता,
गावां थांरी आरती जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।4।।

छप्पन भोग व्यंजन बहु भाती,
आरोगो माँ जीण मदमाती,
जगदम्बा जग त्राता–जगत की माता,
गावां आरती थांरी जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।5।।

'पारीक' संग सबै भगत गावै,
श्री चरणा में सीस आपणो नवावे,
राखज्यो सुख सम्पत्ति दाता–जगत की माता,
गावां आरती थांरी जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।6।।

म्हें गावां मन चित ल्याय,
थारी सोभा वरणी ना जाय,
गावां आरती थांरी जीण माता, मरुभूमि री अन्नदाता।।7।।

– कान्हा बिरज धणिया –

म्हानै सांसा मां प्यारा लागो थे तो,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

थानै दो दो मैय्या लाड लडावै,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
थारै माथे बलराम दाऊ रो हाथ,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
थारै बळदां ऊटां रो साथ,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
म्हानै सांसा .....

थारै दूजै कामधेनु रा टोळा,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
थारै बिलोणै मांखण मोकळा,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
थाने परणास्यूं लेज्यार द्वारका,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
थारै लासू राधा रानी, रूकमा,
हो कान्हा–बिरज रा धणिया !
म्हानै सांसा .....

बालाजी के नाम पाती

मन कहे, जय हो बजरंग बालाजी,

तन पुकारे, जय हो बजरंग बालाजी।

दरसन को व्याकुल तेरे भक्त खड़े,

दास 'पारीक' के संग, कृपा करो बजरंग बालाजी,

मन मंदिर में बसते बजरंग बालाजी,

बसे हैं सबके अंग, बजरंग बालाजी,

सालासर में मूरत बिराजे, बजरंग बालाजी,

दर्शन को आतुर जत्थों के संग, बजरंग बालाजी,

मन कहे, जय हो बजरंग बालाजी,

तन पुकारे, जय हो बजरंग बालाजी।

देव तो एक, उनके अनेक रंग, बजरंग बालाजी,

तेज उनका करे सबको दंग, बजरंग बालाजी,

हो जावे माया मोह भंग, बजरंग बालाजी,

करे जब बालाजी के धाम में सत्संग, बजरंग बालाजी,

मन कहे, जय हो बजरंग बालाजी,

तन पुकारे, जय हो बजरंग बालाजी।

प्रसाद चढ़े सवामणि के संग बजरंग बालाजी,

करे आरती ढोल मृदंग के संग, बजरंग बालाजी,

रुके ना कभी कोई भक्तों की उमंग, बजरंग बालाजी,

सिद्धयोग रूप में शांत करें मन की तरंग बजरंग बालाजी,

मन कहे, जय हो बजरंग बालाजी,

तन पुकारे, जय हो बजरंग बालाजी।

मनोतियां पूरी करें, दें आशीष बजरंग बालाजी,

फिर–फिर आवें, तुम्हें पुकारें, बजरंग बालाजी,

प्रभु प्रकट हो दर्शन दें, बजरंग बालाजी,

सब दुश्मन, अवगुण संहारे, बजरंग बालाजी,

मन कहे, जय हो बजरंग बालाजी,

तन पुकारे, जय हो बजरंग बालाजी।

थारै बांधूं मुकुट मोरपंख,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

थानै सुनावां होली, बजावां चंग,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

थांरा बैली सुदामा अर मनसुखड़ो,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

थारै प्रेम सूं मिटै गोपियां रो दुखड़ो,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

म्हानै सांसा .....

थानै वृंदावन चोखी लागै बांसरी,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

थारै लारै गैली नाचै राधा प्यारी,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

।।ॐ।।

।। शिव स्तुति ।।

आरती–स्तुति लिखै 'पारीक', गावै नराधम "आत्मा",
टेक राखज्यों हमारी, देव शिरोमणि परमात्मा ।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

मान सरोवर में शिव विराजे,
कैलास गिरि पर शिव विराजे।
पार्वती के संग है साजे ,
प्रभु के पार्वती वामांग विराजे।।1।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

जटा–भाल में है, चंद्र–गंगा,
प्रभु के माथे में चमके चंद्र–गंगा।
दिगम्बर का पूर्ण बदन है नंगा,
विभूति शंकर का तन है नंगा।।2।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

थारै लारै होवे थारां भगत चौडा,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

अब तो सम्हालो पावां घणां फोड़ा,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

म्हानै सांसा .....

थानै कुण कैसी नीं तो द्वारकानाथ,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

विठ्ठल, श्रीनाथ, जगन्नाथ, दीनानाथ,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

बलिहारी जावां सबै ग्वाल बाल रै संग,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

तरसै आंख्यां म्हारी, अब तो दिखाओ रासरंग,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

म्हानै सांसा मां प्यारा लागो थे तो,

हो कान्हा–बिरज रा धणिया !

समर्पण

जिव्हा से लेकर नाम, जीवन अपना सफल कर लो ।
मन मंदिर में बसाकर राम, जीवन अपना सफल कर लो ।

बन जाओ दास हरि के, मन अपना निर्मल कर लो,
ना आयु की सीमा हो, ना जातपांत का हो बंधन ।
जब करे समर्पण कोई, तो देखे केवल अपना मन,
नव जीवन अपनाकर, जीवन अपना सफल कर लो।
जीवन का एकाकीपन, अपने रीते मन में,
प्रेम सजाकर तुम, छा जाओ कण कण में,
सांसें देकर अपनी, उलझनें हल कर लो ।
बन जाओ दास हरि के, मन अपना निर्मल कर लो,

जिव्हा से लेकर नाम, जीवन अपना सफल कर लो ।
मन मंदिर में बसाकर राम, जीवन अपना सफल कर लो ।

भाग्य में नहीं था मेरे, जो भी लगता प्यारा।
सब ने जीती दुनिया, मैं तो रह गया न्यारा,
मन की अभिलाशा सारी, नवतेज से विमल कर लो,
तुम से कौन है जीता, मैं तन मन से हारा,
कर दिया तुझको अर्पण, ये मेरा जीवन सारा ।
अब तुम चाहो तो, जीवन मेरा सफल कर दो,
मैं अं ा प्रभु तुम्हारा, अपने में विलय कर दो ।

जिव्हा से लेकर नाम, जीवन अपना सफल कर लो ।
मन मंदिर में बसाकर राम, जीवन अपना सफल कर लो ।

गले माथे पर है सर्पों की माला,
शिव ग्रीवा में शोभित नागों की माला।
कटि में सोहे मृग–चर्म निराला,
दिगम्बर का अम्बर है अति निराला।।3।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

विल्बपत्र, आक–पुश्प, धतूरे की सेवा,
शिव के जल–दूध, धवल चंदन की सेवा।
धवल पुश्प, धवल भस्मधारी महादेवा,
हर शिव ओंकारा धवल विभूति के देवा ।।4।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

कामधेनु, नंदी–श्रृंगी, डमरू व त्रिशूल,
बाजे डमरू व श्रृंगी, चमके शिव की त्रिशूल।
कार्तिकेय, गणेश पुत्र, पार्वती–शिव का कुल,
भोले के गौरी, कार्तिकेय, विनायक का है देवकुल।।5।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

शिवगण ''सन्तलाल'' करें स्तुति, आशुतोश!
भूत–प्रेत–पिशाच करें, जयकार आशुतोश!
दास 'पारीक' बजावें शंख घोश,
शिवशंकर की किंकर करे जयघोश।।11।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

कैलासी घर–घर के वासी,
जटाकेशी नभ पातालवासी।
कैलासी घट–घट के वासी,
दया करो शिव–संकर अविनाशी ।।12।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

कैलासी, घट घट के वासी,
पापनाशी, घर आंगन के वासी।
दया करो अब तो शंकर अविनाशी,
कृपा रखो, गौरा के उर के वासी।।6।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

सुध लेवो, हिमगिरी निवासी,
महादेव है मानस–सरोवर के वासी।
महेश तो है, जन–मन के अधिशाशी,
नीलकंठ, दिगम्बर है, कण कण के वासी।।7।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

कैलासी, घट घट के वासी,
प्रभुदेवा, घर छप्पर के निवासी।
शिव तो हर बाग–बगीची के रहवासी,
सादर शीश नवावें, सब भारतवासी।।8।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

शिव–स्तुति गावें, प्रेत, पिशाच, वृक्षवासी,
डाकिन, शाकिन, गंधर्व, देवलोकवासी।
जयकार करें, अमरनाथ–उत्तरकाशी,
जय जय जयकार करें, रामेश्वर–काशी।।9।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

कैलासी हर मन के अंर्तवासी,
दया करो, शंकर अविनाशी।
रहम करो, विध्न हरो, हे संकटनाशी,
कृपा करो, महादेव अविनाशी ।।10।।

कैलासी ! घट घट के वासी,
दया करो, शिव–शंकर अविनाशी ।

—मनहर—

ये सूरत, ना होती सांवरी,

राधिका, ना होती बावरी,

किसन सा अवतार ना होता!

अरे कान्हा, तुम को नहीं कौन जानते,

गोपियां, तेरा ठिकाना सब जानते,

दरसन लिखा है तो आयेगा,

कन्हैया, हमारे कीर्तन में!

ये सूरत, ना होती सांवरी,

राधिका, ना होती बावरी,

किसन सा अवतार ना होता!

ये अकाल, ना होता मरूधरा,

जीवन, ना होता अधमरा,

किसन, तेरा अवतार यहां होता!

कानन कुण्डल सर्प बिराजै, बळदां री सवारी, नारद करै पूजा रै,

त्रिभुवन रा स्वामी, सरणागत री– रक्षा करै नी दूजा रै।

कल्पतरू सम समन करै जम, ओ हो शंभु तिमिरविनाशी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।4।।

डांवै विराजै गिरिजा, गळै सोहे नाग, खोस नाखी भग री जोत,

कालकूट झैर भख्यो नीलकण्ठ, उभां देख्या पांती रा सीरी भोत।

धारण करै हाथां में मृग अर फरसो, यक्षराज रा सखा, हो हिमवासी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।5।।

जन्म मरण री औसद, बम रो समाधान, होवै तीन सत्व प्रधान,

तीजी आंख ललाट मां, भोग अर मोक्ष रो साथै करै अभयदान।

पाप–राशि अर दक्ष–यज्ञ विनासी, हो विस्वनाथ विराजै काशी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।6।।

दसों दिसा ही गाबा दिगम्बर रा, भोळा भण्डारी दीनदयाल रै,

पूजे आसुतोस नै तो हौवे मालामाल, नटराज खुद पैरै नाहर री छाल रै।

विग्रह री रक्षा करै पंचतत्व, हो शिव हिमवासी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी ।।7।।

अरे इन्दर, तुम बरसना ना जानते,

बादल, तुम गरजना बस जानते,

अकाल, अजेय ना रहेगा राजस्थान में !

ये सूरत, ना होती सांवरी,

राधिका, ना होती बावरी,

किसन सा अवतार ना होता!

मुरली की धुन में पड़ेगा, सब सुख छोड़ना,

सीखा है, हमने भी सांवरियां तेरा मुख मोड़ना,

सूरत कभी ना कभी तो दिखायेगा,

मनहर, हमारे कीर्तन में।

ये सूरत, ना होती सांवरी,

राधिका, ना होती बावरी,

किसन सा अवतार ना होता!

।।ऊँ।।

–: श्री शिव मृत्युन्जय पाठ :–

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।

मेरू पहाड़ सो धनुस चढ़ायो, चांप वासुकि नागराज रै,

गढ़ तीनूं भस्म दैत्यां रा, जदै चलायो बान, बिस्णु नै साज रै।

भाल जटां मां पळका मारै ससि, हो महादेव कैलासी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।1।।

मंदार, कल्प, संतान, पारिजात–हरिचंदन, सुमन पांचू पूजै जुगल चरण नै,

नैन तीजा री लाय करै भस्म काम, रमाय लियो विभूति तन बदन में।

संहारै भुवन, करै नवनिरमाण, हो अनादिसंकर अविनासी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।2।।

ब्रह्मा बिस्णु पूजै पदपंकज, जो औढ़े गज री खाल मोटी रै,

देवता संत आरती उतारै गंगा माई री, बा बंधी जटां–शंकर री चोटी रै।

गंगा री लहरा सूं सीतल सीस, हो गंगाधर कैलासी,

सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी।।3।।

रचै रचना ब्रह्मा रूप, पालनहार बिस्णु स्वरूप, संहारे रूद्र रै,
कण कण मां बिराजै भगवान, भगत जिणरा भूत प्रेत क्षुद्र रै ।
जम रा भी जम हो महाकाल, पण नित रा नुवां खेलां रमसी,
सरणों लियो जद चंदरसेखर रो, तो अब जम म्हारो के करसी ।।8।।

कश्टहरण रूद्र, पालन करै जीवन क्षुद्र,
स्थाणु स्थिर उमापति हो भालचंद्र ।
करै हलाहल पान, नीलकण्ठ थे महान,
मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।।9।।

कलामूर्ति, काल आग सम, काल रो नास,
गळा में काळो नाग, कैलास रो बास ।
कालाग्नि, कालकण्ठ, कालविजेता समान,
मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।। 10 ।।

गरदन पड़ गई नीली, नैन विसाल,
सान्त–धीर, निरमल चमकै भाल ।
विरूपाक्ष, निरूपद्रव देव है महान,
मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।। 11 ।।

वामदेव, महादेव, देवादिदेव हो,
लोकनाथ, विस्वनाथ, जगदेव हो,
रचनाथारी, चालै थारै पाण,
मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।।12।।

जन्म दें और पालन करें,
बिन इनके परिणाम है क्या ?
भूल नहीं सकते उपकार,
इनके बिन आराम है क्या ?

सब देवों को भजा है 'पारीक',
इनको भजे बिन काम है क्या ?
देवराज से बढकर शोभित,
इनके आगे चारों धाम है क्या ?

तन–मन–जीवन इनको अर्पण,
अस्थि–मज्जा, चाम है क्या?
जनक–जननी, जन्मभूमि, गुरूवर,
इनकी दया का कोई दाम है क्या?

जननी है या जन्म भूमि है,
'माँ' से सुन्दर नाम है क्या ?
धरती जैसी सहने वाली,
तुम से पावन धाम है क्या ?

देवां रा भी देव, जगतपति, भुवनस्वामी,

पताका में बळदां री छाप, माथा मां गंगाथामी ।

जगदीस, देवेस, महादेव देव महान,

मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।।13।।

आदि नहीं, जन्म नहीं, अनन्त अन्तहीन,

बढै नहीं, क्षय नहीं, विकार नहीं, ध्यानलीन ।

कश्ट हरै, रुद्राक्ष माळाधारी रो स्तुति गान,

मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।। 14।।

जन्म मरण रा चक्र सूं देवै मुक्ति,

कैवल्य पद, परम चरम आनन्द री भक्ति ।

नित्य, निरंतर, सदाबहार, सनातन मान,

मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।। 15 ।।

रचना करै, करै पालन, संहार करै महाकाल,

बैकुण्ठ–मोक्ष दाता, राखो दृश्टि त्रिकाल ।

तौड़ै जूना, करै सृश्टि नव निर्माण सिवभगवान,

मौत के करसी, कियो सिव रो ध्यान ।।16।।

स्तुति चारधाम

जनकाय विश्णु रूपाय गुरवे गोविंदाय च ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि चिर गरीयसी।।

जननी है या जन्म भूमि है,

'माँ' से सुन्दर नाम है क्या ?

धरती जैसी सहने वाली,

तुम से पावन धाम है क्या ?

जनक है या शिक्षक है,

जीवन में उत्तम काम है क्या ?

अपने से ऊपर उठाने वाले,

इनसे ऊंचे राम हैं क्या ?